पद *(मीरा)*

पदों की व्याख्या

1. हरि आप .... म्हारी भीर।।

भावार्थ मीराबाई अपने आराध्य देव से प्रार्थना करती हैं कि हे ईश्वर! केवल आप ही अपनी इस दासी के कष्टों को दूर कर सकते हैं। आपने ही द्रौपदी की लाज बचाकर उसे अपमानित होने से बचाया था। जिस समय दु:शासन ने भरी सभा में द्रौपदी का चीरहरण करने का प्रयास किया था, तब आपने ही उसके चीर को बढ़ाया था।

इसी प्रकार अपने प्रिय भक्त प्रह्लाद को बचाने के लिए आपने भगवान नरसिंह का रूप धारण किया था। आपने ही डूबते हुए हाथी को मगरमच्छ के मुँह से बचाकर उसके जीवन की रक्षा की थी और उसकी पीड़ा को दूर किया था। दासी मीरा प्रार्थना करती है कि हे गिरिधर! आप मेरे कष्टों को भी दूर कर मुझे (आपकी दासी मीरा को) भी हर प्रकार के सांसारिक बंधन से छुटकारा दिला दीजिए।

2. स्याम म्हाने .... बाताँ सरसी।

भावार्थ मीरा, श्रीकृष्ण से प्रार्थना करते हुए कहती हैं कि हे श्याम! तुम मुझे अपनी दासी (सेविका) बनाकर रख लो। मीरा, श्रीकृष्ण से प्रार्थना करती हुई दोबारा कहती हैं। हे गिरिधारी लाल! तुम मुझे अपने यहाँ सेविका के रूप में रख लो। मैं तुम्हारी सेविका के रूप में रहते हुए तुम्हारे लिए बाग-बगीचे लगाया करूँगी, जिसमें तुम घूम सको। जब तुम रोज़ सुबह यहाँ घूमने आओगे, तो मैं तुम्हारे दर्शन कर लिया करूँगी। मैं वृंदावन के बागों और गलियों में तुम्हारी लीलाओं के गीत गाया करूँगी। तुम्हारी सेवा करते हुए मुझे तुम्हारे दर्शन करने का अवसर भी मिल जाएगा। तुम्हारे नाम-स्मरण के रूप में मुझे जेब-खर्च भी प्राप्त हो जाया करेगा। इस प्रकार मुझे तुम्हारे दर्शन, स्मरण और भक्ति रूपी जागीर तीनों आसानी से मिल जाएँगे, जिससे मेरा जीवन सफल हो जाएगा।

3. मोर मुगट .... घणो अधीराँ।

भावार्थ मीराबाई, श्रीकृष्ण के रूप-सौंदर्य पर अत्यंत मोहित हैं। वह उनके रूप-सौंदर्य का वर्णन करते हुए कहती हैं कि श्रीकृष्ण के माथे पर मोरपंखों से बना हुआ सुंदर मुकुट सुशोभित हो रहा है। उनके शरीर पर पीले वस्त्र शोभा पा रहे हैं। उनके गले में फूलों की वैजंती माला बहुत सुंदर लग रही है।

मन को मोहित कर लेने वाले और मधुर-मधुर बाँसुरी बजाने वाले श्रीकृष्ण वृंदावन में गाय चराते हैं। वृंदावन में मेरे श्रीकृष्ण का भव्य और ऊँचा महल है।

मैं इस महल के बीचों-बीच सुंदर फूलों से सजी फुलवारी बनवाऊँगी। इसके पश्चात् मैं लाल रंग की साड़ी पहनूँगी और अपने साँवरे के दर्शन करूँगी।

मीरा, श्रीकृष्ण से निवेदन करती हैं कि हे प्रभु! तुम आधी रात को यमुना नदी के किनारे अपने दर्शन देने के लिए अवश्य आना, क्योंकि मेरा मन तुम्हारे दर्शन के लिए अत्यंत व्याकुल हो रहा है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

पद्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

1. हरि आप हरो जन री भीर।
द्रौपदी री लाज राखी, आप बढ़ायो चीर।
भगत कारण रूप नरहरि, धर्‌यो आप सरीर।
बूढ़तो गजराज राख्यो, काटी कुण्जर पीर।
दासी मीराँ लाल गिरधर, हरो म्हारी भीर।।

(क) प्रस्तुत पद्यांश में मीरा ने किसे संबोधित किया है?
(i) भगवान नरसिंह को
(ii) भक्त प्रह्लाद को
(iii) आराध्य देव श्रीकृष्ण को
(iv) श्रीकृष्ण के भक्तों को

(ख) 'द्रौपदी री लाज राखी, आप बढ़ायो चीर' पंक्ति से क्या आशय है?
(i) द्रौपदी के चीरहरण के समय उसकी लाज रखने के लिए आपने (श्रीकृष्ण ने) उसके चीर (साड़ी) को बढ़ाया
(ii) द्रौपदी के वस्त्र को बढ़ाकर आपने उसकी रक्षा की
(iii) हरि का यहाँ साड़ी (चीर) से कोई संबंध नहीं है
(iv) उपरोक्त में से कोई नहीं

(ग) उपरोक्त पद्यांश में 'चीर' शब्द का क्या अभिप्राय है?
(i) चीरना
(ii) फाड़ना
(iii) वस्त्र
(iv) काटना

(घ) 'भगत कारण रूप नरहरि, धर्‌यो आप सरीर' पंक्ति के माध्यम से कवयित्री क्या कहना चाहती है?
(i) भक्त की रक्षा के लिए आपने (श्रीकृष्ण ने) भगवान नरसिंह का रूप धारण किया
(ii) नरसिंह का रूप भक्त की सेवा के लिए धारण करना पड़ा
(iii) भक्त के लिए आपको नरसिंह बनना पड़ा
(iv) उपरोक्त में से कोई नहीं

2. स्याम म्हाने चाकर राखो जी,
गिरधारी लाला म्हाँने चाकर राखो जी।
चाकर रहस्यूँ बाग लगास्यूँ नित उठ दरसण पास्यूँ।
बिन्दरावन री कुंज गली में, गोविंद लीला गास्यूँ।
चाकरी में दरसण पास्यूँ, सुमरण पास्यूँ खरची।
भाव भगती जागीरी पास्यूँ, तीनूं बाताँ सरसी।

(क) प्रस्तुत पद्यांश में मीरा द्वारा श्रीकृष्ण से क्या प्रार्थना की गई है?
(i) मेरे कष्ट हर लो
(ii) मुझे अपनी दासी बना लो
(iii) मेरे जीवन को सुखों से भर दो
(iv) मेरा संसार में नाम कर दो

(ख) मीरा श्रीकृष्ण की सेवा किस कारण करना चाहती हैं?
(i) धन लाभ के लिए
(ii) दर्शन करने के लिए
(iii) यशस्वी बनने के लिए
(iv) अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिए

(ग) श्रीकृष्ण के नाम स्मरण से कवयित्री को कौन-सा लाभ प्राप्त होगा?
(i) यश प्राप्त करने का
(ii) श्रीकृष्ण के दर्शन करने का
(iii) (i) और (ii) दोनों
(iv) उपरोक्त में से कोई नहीं

(घ) पद्यांश के अनुसार कवयित्री श्रीकृष्ण की सेवा कैसे करना चाहती है?
(i) चाकर बनकर
(ii) भक्तिन बनकर
(iii) सखी बनकर
(iv) उपरोक्त में से कोई नहीं

3. मोर मुगट पीतांबर सौहे, गल वैजंती माला।
बिन्दरावन में धेनु चरावे, मोहन मुरली वाला।
ऊँचा ऊँचा महल बणावं बिच बिच राखूँ बारी।
साँवरिया रा दरसण पास्यूँ, पहर कुसुम्बी साड़ी।
आधी रात प्रभु दरसण, दीज्यो जमनाजी रे तीरां।
मीराँ रा प्रभु गिरधर नागर, हिवड़ो घणो अधीराँ।

(क) श्रीकृष्ण ने अपने गले में निम्नलिखित में से क्या पहना हुआ है?
(i) मोतियों की माला (ii) फूलों की माला
(iii) सोने का हार (iv) वैजंती माला

(ख) 'आधी रात प्रभु दरसण, दीज्यो जमनाजी रे तीरां' पंक्ति में 'तीरां' किसका प्रतीक है?
(i) किनारा (ii) नदी
(iii) तीर (iv) मध्य

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(ग) प्रस्तुत पद्यांश में किसका वर्णन किया गया है?
(i) दासी मीरा का
(ii) श्रीकृष्ण के रूप सौंदर्य का
(iii) मीरा की विरह वेदना का
(iv) मीरा की पीड़ा का

(घ) मीरा श्रीकृष्ण के महल के बीच में क्या बनवाना चाहती हैं?
(i) स्वयं के लिए घर
(ii) सुंदर फूलों से सजी फुलवारी
(iii) भव्य मंदिर
(iv) गाय के लिए गौशाला

अध्याय पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

1. मीरा आधी रात को श्रीकृष्ण को कहाँ पर मिलना चाहती है?
(क) अपने घर पर
(ख) यमुना के तट पर
(ग) सखी के घर पर
(घ) मंदिर के आँगन में

2. मीराबाई अपने वेतन के रूप में क्या पाना चाहती हैं?
(क) सुंदर वस्त्राभूषण
(ख) महलों का सुख
(ग) कृष्ण जी का स्मरण
(घ) कृष्ण जी का दर्शन

3. मीरा श्रीकृष्ण के पास रहने का क्या लाभ बताती हैं?
(क) उसे श्रीकृष्ण को याद करने की जरूरत नहीं होगी
(ख) उसे हमेशा दर्शन प्राप्त होंगे
(ग) उसकी भाव भक्ति का साम्राज्य बढ़ता ही जाएगा
(घ) उपरोक्त सभी

4. मीरा अपने साँवरिया का दर्शन कैसी साड़ी पहनकर प्राप्त करना चाहती हैं?
(क) रेशमी साड़ी
(ख) खद्दर की साड़ी
(ग) केसरिया रंग की साड़ी
(घ) हरे रंग की साड़ी

5. पाठ 'पद' के आधार पर 'हिवड़ो घणो अधीराँ' से क्या आशय है?
(क) हृदय बहुत मजबूत है
(ख) हृदय घड़े के समान है
(ग) हृदय मिलन के लिए अधीर है
(घ) हृदय बहुत पीड़ित है

6. मीरा के भक्ति भाव का साम्राज्य कैसे बढ़ेगा?
(क) मीरा के कृष्ण के पास रहने से
(ख) मीरा के गली-गली घूमने से
(ग) मीरा के दोहे लिखने से
(घ) मीरा के नृत्य करने से

7. श्रीकृष्ण के गले में कैसे फूलों की माला सुशोभित हो रही है?
(क) गेंद के फूलों की
(ख) गुलाब के फूलों की
(ग) वैजंती के फूलों की
(घ) चमेली के फूलों की

8. मीराबाई श्रीकृष्ण को पाने के लिए क्या-क्या करने को तैयार हैं?
(क) बाग-बगीचे लगाने को
(ख) नाम स्मरण करने को
(ग) दासी बनने को
(घ) ये सभी

9. 'तीनूं बाताँ सरसी' से क्या आशय है?
(क) मीरा श्रीकृष्ण से तीन बातें करेंगी
(ख) मीरा श्रीकृष्ण से तीन बार मुलाकात करेंगी
(ग) मीरा श्रीकृष्ण से तीन वचन पूरे करेंगी
(घ) मीरा भक्ति के तीनों रूपों का सुख प्राप्त करेंगी

10. 'सुमरण पास्यूँ खरची' से क्या तात्पर्य है?
(क) जेब खर्च के लिए बहुत रुपये मिलेंगे
(ख) याद करने से पैसे प्राप्त हो जाएँगे
(ग) जेब खर्च के रूप में प्रभु स्मरण का उपहार पाऊँगी
(घ) स्मरण करने में पैसे खर्च नहीं होंगे

11. मीराबाई श्रीकृष्ण से क्या चाहती हैं?
(क) उच्च पद पर आसीन होना
(ख) श्रीकृष्ण के साथ जाना
(ग) अपनी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति
(घ) श्रीकृष्ण उन्हें दर्शन दें

12. 'काटी कुण्जर पीर' से क्या आशय है?
(क) हाथी को मोक्ष प्रदान करना
(ख) हाथी को पीड़ा से मुक्त कराना
(ग) हाथी का पाँव काटना
(घ) हाथी को पीर के पास ले जाना

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

13. मीराबाई ने 'हरि' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया है?
(क) भगवान शिव के लिए
(ख) भगवान विष्णु और उनके विभिन्न अवतारों के लिए
(ग) ब्रह्मा के लिए
(घ) साधारण मनुष्य के लिए

14. मीरा वृंदावन में क्यों जाकर बसी थीं?
(क) कृष्ण के लिए
(ख) रासलीला देखने के लिए
(ग) पारिवारिक संतापों से मुक्ति पाने के लिए
(घ) काव्य रचना करने के लिए

15. श्रीकृष्ण ने नरहरि का रूप क्यों धारण किया?
(क) कंस को मारने के लिए
(ख) अपने शत्रुओं से बदला लेने के लिए
(ग) जंगल में विचरण करने के लिए
(घ) अपने भक्तों की रक्षा करने के लिए

उत्तरमाला

पद्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

1. *क (iii), ख (i), ग (iii), घ (i)* **2.** *क (ii), ख (ii), ग (iii), घ (i)* **3.** *क (iv), ख (i), ग (ii), घ (ii)*

अध्याय पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

1. *(ख)* **2.** *(घ)* **3.** *(घ)* **4.** *(ग)* **5.** *(ग)* **6.** *(क)* **7.** *(ग)* **8.** *(घ)* **9.** *(घ)* **10.** *(ग)*
11. *(घ)* **12.** *(ख)* **13.** *(ख)* **14.** *(ग)* **15.** *(घ)*

व्याख्या सहित उत्तर

5. *(ग)* 'हिवड़ो घणो अधीराँ' पंक्ति से तात्पर्य है कि मीरा श्रीकृष्ण से निवेदन करती हैं कि हे प्रभु! तुम मुझे दर्शन देने आधी रात के समय यमुना नदी के किनारे अवश्य आना, क्योंकि मेरा मन अब तुम्हारे दर्शन के लिए अधीर हो रहा है अर्थात् धैर्य नहीं कर पा रहा है।

9. *(घ)* 'तीनूं बाताँ सरसी' पंक्ति से आशय है कि मीरा अपने प्रभु श्रीकृष्ण से कहती हैं कि हे प्रभु! मुझे तुम्हारी सेवा करने से तुम्हारे दर्शन, स्मरण और भक्ति रूपी जागीर तीनों आसानी से मिल जाएँगे और मेरा जीवन सफल हो जाएगा।

10. *(ग)* 'सुमरण पास्यूँ खरची' पंक्ति में मीराबाइ अपने प्रभु श्रीकृष्ण से कहती हैं कि हे प्रभु! तुम्हारी सेवा करते हुए मुझे तुम्हारे दर्शन करने का अवसर भी मिल जाएगा और इस तरह तुम्हारे नाम स्मरण के रूप में मुझे जेब खर्च भी प्राप्त हो जाया करेगा।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in